श्री महावीराय नमः

1

प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतियोगी का नाम :
शिल्पी जैन D/o सन्तोष जैन
ग्राम व पोस्ट राजपुर, जिला - अशोकनगर (म.प्र.)

एक बंद किताब सी रही हूँ मैं।
अब खरा सा खुलना चाहती हूँ मैं।।
कहिये क्या आप पढ़ेंगे मुझे।।
मैं पाठशाला पर एक निबंध लिखना चाहती हूँ मैं।।

[शिल्पी जैन]

← आओ पाठशाला चलें →

पाठशाला के मुख्य आकर्षण

धार्मिक शिक्षा → तीर्थ क्षेत्र यात्रा → स्थापना दिवस पर वार्षिकोत्सव | प्रतिभा प्रोत्साहन

बालसभा में पुस्तक वितरण | पाठशाला के मुख्य आकर्षण | प्रत्येक रविवार मिष्ठान वितरण | सांस्कृतिक कार्यक्रम

संस्कार से समूह बनाना | खेल कूँद | रविवारीय पूजन | शिक्षण शिविर का आयोजन

← माँ जिनवाणी सुरक्षा सप्ताह का आयोजन →
← दशलक्षण महापर्व पर सामान्य ज्ञान व प्रतियोगिताओं का आयोजन

पाठशाला पर निबंध अगले पेज से शुरू है।

प्रतियोगिता आयोजित कराने वाले सभी साधर्मी जनो को सादर जय जिनेंद्र

पाठशाला निबंध

पाठशाला निबंध के मुख्य बिन्दु
(1) पाठशाला के उद्देश्य -
(2) पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएँ
(3) वर्तमान समयानुसार किस पद्धति से बच्चो को पढ़ाया जाये।

(1) पाठशाला के उद्देश्य ⇒ आज के वर्तमान परिवेश मे जब बच्चे पाश्चात्य संस्कृति के संस्कारो मे ढल चुके है धर्म का स्वरूप पूरी तरीके से समाप्त होने की ओर अग्रसर था वर्णी जी के द्वारा चलाई गई पाठशालाएँ विलुप्त होती जा रही थी उस समय के संस्कारो को जीवंत रखने के उद्देश्य से आज के मुनि-आर्यिका पाठशालाओ को जीवंत रखने के लिए अथक प्रयास कर रहे है, जिसका उद्देश्य जैन बच्चो मे जैन संस्कारो को जीवंत रखने के उद्देश्य से आज पाठशालाएँ चलाई जा रही है।
आज की कठिन परिस्थिति में पाठशाला के माध्यम से ही संस्कारो का बीजारोपण हो सकता है।
वही दूसरी ओर जैन संस्कृति का ह्रास देखा जा रहा है वहां आवश्यकता है [संस्कारो के शंखनाद की]
ये संस्कार मिल सकते है एक पाठशाला में

पाठशाला के उद्देश्य बिन्दुओ मे से कुछ का विवरण निम्नानुसार है-

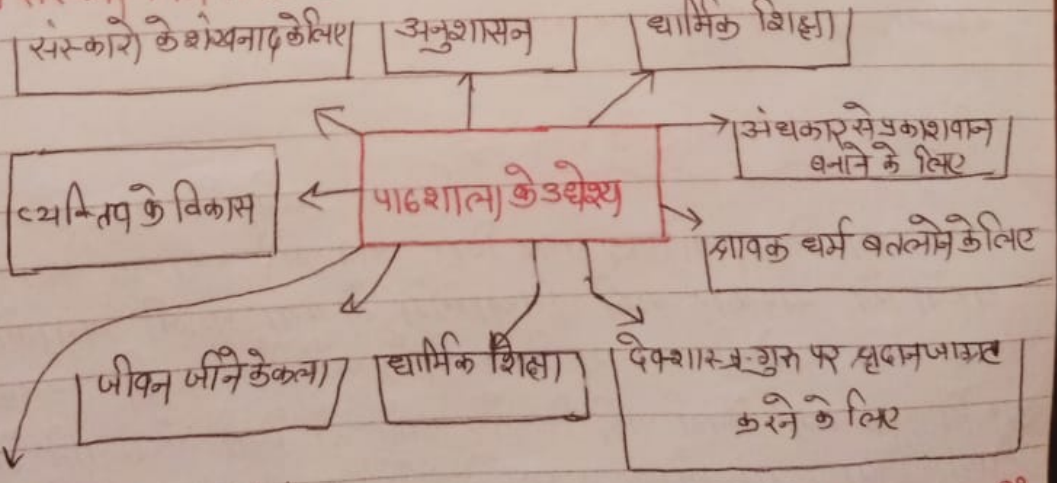

① व्यक्तित्व के विकास के लिए पाठशाला ⇒
आज के बदलते परिवेश मे जिस प्रकार भोजन कितने भी अच्छी तरीके से क्यो न बनाया गया हो किन्तु उसमे नमक न डाला जाये तो भोजन सुस्वादु व स्वादिष्ट नही लगता ठीक उसी प्रकार धार्मिक शिक्षा और उसके अच्छे व्यक्तित्व के अभाव में व्यक्ति दुर्लभता से प्राप्त नर भव पर्याय का आनन्द नही ले पाता न ही उसका सदोपयोग कर पाता है।
इस प्रकार जब पाठशाला संचालित होती है तो बचपन से ही बच्चे पाठशाला में आने लगते है तो पाठशाला के माध्यम से अपने व्यक्तित्व का विकास कर लेते है।

② नई पीढ़ी को धर्म से जोड़ने के लिए ⇒
आज के वर्तमान समय मे लौकिक शिक्षा का ज्ञान अत्यंत उपयोगी बनता जा रहा है सो तो ठीक है - [किन्तु आटे मे नमक के बराबर ही सही धार्मिक शिक्षा का ज्ञान] ॥ भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।॥
वह धार्मिक ज्ञान पाठशाला के माध्यम से सिखा सकते है कि लौकिक शिक्षा धन कमाने के लिए जड़ वस्तुओ का संग्रह करने के लिए किन्तु धन के सदोपयोग करने की कला, जिससे मानव जाति का पतन नही उत्थान हो॥
[अशान्ति नही मानसिक शांति प्राप्त हो] यह कला तो पाठशाला से ही संबंधित है।

③ संस्कारवान निर्माण के लिए ⇒
विद्वान कवि ने कहा है-
मंदिर बना लिए, मस्जिद बना लिए, अब और क्या-2 बनाओगे।
बच्चो को संस्कार नही सिखाओगे, तो क्या जंगली बनाओगे॥
आज बच्चे अंग्रेजी माध्यम विद्यालयो मे पढते है जहां की पुस्तक मे शुरु से अंत तक मैनर्स नही सिखाये जाते तो ऐसी परिस्थिति मे बच्चो मे माता-पिता, गुरुजनो, आपस में मैत्रीभाव सम्मान करने के संस्कार पाठशाला से ही सम्भव है।
इस तरीके से हमारी पाठशाला, संस्कारो का शंखनाद करनेवाली है॥

अनुशासन सिखानेवाली ⇒
जिस प्रकार अच्छे विद्यार्थी की परीक्षा उसके आचरण से होती है, तो हमारी पाठशाला सिखलाती है -
अनुशासन में रहकर प्राणी जग में पूजा जाता है।
सहनशील समताधारी बन जीवन सफल बनाता है॥

श्रावक धर्म को सिखाने के उद्देश्य ⇒
आज की युवा पीढ़ी समय के साथ-2 अपने श्रावक धर्म को भूलती जा रही है ऐसे मे जब बच्चा पाठशाला आता है तो उसे सिखाया जाता है -
देवा पूजा, गुरु पास्ति, स्वाध्याय: समयस्तप: ।
दानं चेति गृहस्थानां, षटकर्माणि दिने-दिने ॥
अर्थात बच्चे पाठशाला मे आकर बहुत ही अच्छे ढंग से श्रावक धर्म को सीख सकते है।

कुरीतियो को मिटाने के लिए ⇒
पतझड़ न रहे, इसीलिए बसंत चाहिए
कुरीतियों का अब तो हमें अंत चाहिए।
यदि इन कुरीतियो को मिटाना है तो
हर गाँव मे एक पाठशाला चाहिए।

उद्देश्य अनेक है उनका ब्यौरा भी बहुत है शब्द भी है लेकिन सीमित शब्दो मे निबंध को पूर्ण करना है इसलिए पाठशाला के उद्देश्यो का विवरण मैं इतना ही।

(2) [पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएं।]

अध्यापक का पर्यायवाची नाम शिक्षक भी होता है और शिक्षक का अर्थ होता है-

शि → शीलवान ।
↘ शिखर तक लेजाने वाला ॥

क्ष → क्षमाशील
↘ क्षमा की भावना रखने वाला

क → कर्मशील, कर्तव्य निष्ठ
↘ कमजोरी को दूर करने वाला।

शिखर तक पहुँचाने वाला और शीलवान ⇒ जिस प्रकार एक शिक्षक ने को अपने आचरण व ज्ञान के माध्यम से कम्प्यूटर, डॉक्टर, इंजीनियर बना सकता है। उसी प्रकार पाठशाला के माध्यम से मुनि, आर्यिका, श्रीमान होते है जो शाश्वत सिद्ध पद को प्राप्त करने वाले होते है।

क्षमाशील ⇒ समाज मे जरूरी नही की हर समय सम्मान मिले कभी असम्मानित व अपमानित भी होना पड़ता है। ऐसे मे शिक्षक को - क्षमा शस्त्रं करे यस्य:, दुर्जन: किं करिष्यति। अतृणे पतितो वह्नि: स्वयंमेवोपशाम्यति।

कमजोरी व गलतियो को सुधारने वाले ⇒ शिक्षक यदि शिक्षक है तो उसे अवश्य याद रखना चाहिये - कि वकील की गलती फाइल मे, डॉक्टर की गलती कब्र में दफना दी जाती है। परन्तु शिक्षक की गलती - पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ी होती जाती है अर्थात शिक्षक को गलतियो से बचना चाहिये। और बच्चो की कमजोरी दूर करना चाहिए।

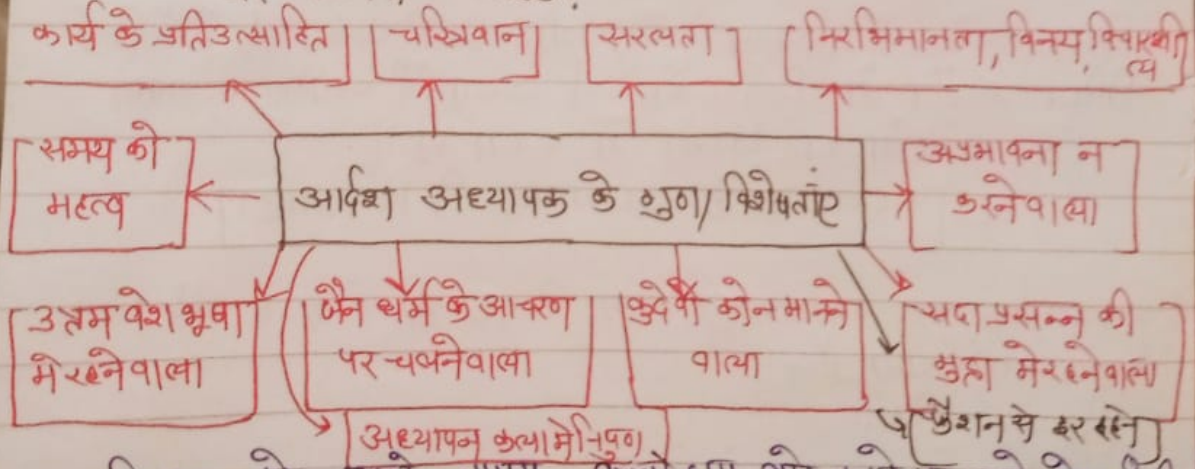

एक शिक्षक को पढ़ाते समय बच्चो द्वारा शोर करने पर उन्हे ओम शांति कहकर शाँत करना चाहिए।

② पढ़ाने के लिए उचित शैली का प्रयोग करना चाहिए।

③ ज्यादा नही पर बार-2 पढ़ाना चाहिए।

④ बच्चो को उनकी गलती पर एकांत मे डाटनां चाहिये।

⑤ शिक्षक को हमेशा अच्छी भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

वर्तमान समयानुसार किस पद्धति से बच्चों को पढ़ाया जाये।

वर्तमान समय है जो चल रहा है कि भौतिक चकाचौंध पाश्चात्य संस्कृति का है ऐसे जब बच्चा नर्सरी कक्षा से स्कूल जाना शुरु करता है तो उसे वहां सुंदर बिजलिय कक्षा फर्नीचर गेम आदि मिलते है शिक्षिकाए भी बड़े रोचक ढंग से शिक्षिकाए अपनी ओर आकर्षित करती है यदि विद्यालय जैसी सुविधाएँ पाठशाला में प्राप्त हो तो संभवतः पाठशालाए सफल बन सकती है।

मेरे विवेक अनुसार पाठशाला में निम्नानुसार आकर्षित करना चाहिए।

(1) प्रवेश फार्म, बैंच बैंग व ड्रेस उपलब्ध करवाकर ⇒

जिस प्रकार बच्चा पहली बार स्कूल जाता है तो उसे प्रवेश के साथ बैंच, बैंग, ड्रेस, पुस्तक आदि उपलब्ध कराये जाते है तो बच्चा उत्साहित होता है तो यह सभी सामग्री उपलब्ध कराकर हम अपनी पाठशाला को सफल बना सकते है।

(2) उच्च गुणवत्ता के उपहार ⇒

बच्चो को यदि कुछ गिफ्ट मिलती है तो बच्चे अपने आप को प्रसन्न भी सम्मानित महसूस करते है। उपहार देकर भी वर्तमान परिस्थिति मे पाठशालाओ को सफलता दिला सकता है। अर्थात महीने मे तीन चार बार पुरुस्कार वितरण करना चाहिए।

(3) सामूहिक बालसभा ⇒

बाल सभा के माध्यम से बच्चो को माइक पर बोलना, मंच संचालन आदि गतिविधियो सीखते है और बालसभा मे गिफ्ट आदि मिलने से बच्चो की उपस्थिति इतने कठिन माहौल में भी बढ़ जाती है।

(4) रविवारीय पूजन व स्वल्पाहार ⇒ रविवारीय पूजन से बच्चे

प्रवचन आदि करना बचपन से ही सीख जाते हैं। और बच्चों को प्रवचन के बाद जो नाश्ता दिया जाता है उससे बच्चे प्रवचन में भी शामिल होते हैं लेकिन ध्यान रखना चाहिए नाश्ते में मीठा, नमकीन, इत्यादि सभी चीजे भरपूर मात्रा में होना चाहिये। क्योंकि सामूहिक प्रवचन व नाश्ता करना बच्चों को अच्छा लगता है।

वर्तमान परिवेश के कुछ और विशेष आकर्षित केन्द्र -

① पाठशाला कार्यालय ⇒

पाठशाला का कार्यालय जितना अच्छा होता है वह पाठशाला उतनी ही उन्नत मानी जाती है पाठशाला कार्यालय में कक्षा में फर्नीचर, रैंक, अलमारी आदि होने चाहिए जिसमे मिष्ठ अण्डर पाँच से छः महीने का एक साथ करके रखना चाहिए जिसे देखकर बच्चे पाठशाला लगन के साथ आते है।

② डिजिटल कक्षा ⇒ आज बच्चे टीवी, मोबाइल चलाना पसंद करते हैं ऐसी परिस्थिति में पाठशाला में एक डिजिटल कक्षा होगा तो एक-एक दिन एक-एक ग्रुप के बच्चों को उस कक्षा में अध्ययन के लिए ले जाया जायेगा तो बच्चों में धर्म के प्रति आकर्षण बढ़ेगा और बच्चे पाठशाला भी लगन व पूर्ण मन के साथ पाठशाला मे उपस्थित होंगे।

③ कहानी दिखाकर, ⇒

आज बच्चे छोटा भीम, मोटू पतलू कार्टून आदि देखना पसंद करते हैं यदि धार्मिक कहानी कविताओं को LED या प्रोजेक्टर पर दिखाया जाये तो बच्चे अच्छा सीखते है और पाठशाला सफल भी बनती है। जैसे - बाल कथाएं, कहानियाँ - मैनासुंदरी, चंदनबाला आदि।

(4) **कम्प्यूटर, व आर्टस कक्षाएं प्रारंभ करके ⇒** प्रायः 9 से 12 तक बच्चे पाठशाला आने मे परेशानी महसूस करने लगते है यदि ऐसे मे उन्हे कुछ अलग सप्ताह मे तीन दिन मिलाकर कम्प्यूटर। आर्टस के साथ-2 धार्मिक शिक्षा व संस्कार उपलब्ध करवाये जा सकते है।

(5) **शिविर आयोजन ⇒** गर्मी की छुट्टियो में उचित समय को देखकर शिविर का आयोजन कराकर जिसमें धर्म के अलावा कुछ और कलाएं जैसे संगीत मेहदीं, सिलाई सिखाकर उसके प्रमाण पत्र भी उपलब्ध कराकर बच्चो को पाठशाला मे बुलाया जा सकता है।

(6) **प्रतियोगिताओ का आयोजन ⇒** कई प्रकार की प्रतियोगिताओ का आयोजन कराकर रंगोली। मेहदी, भजन, फैसंन डिजाइनिंग आदि जिसके माध्यम से बच्चो को पुरुस्कार आदि की प्राप्ति होती है और बच्चे पाठशाला की तरफ आकर्षित होते है।

(7) **खेल सामग्री पर्याप्त उपलब्ध कराना ⇒** बच्चे खेलना अधिक पसंद करते है तो शिक्षको को सप्ताह मे 1 दिन खेल अवश्य कराना चाहिए। उसके लिए लूडो, कैरम, जैनसापसीढ़ी रस्सीकूद, इन्डोर व आउटडोर गेम समय-2 पर कराना चाहिए। जिससे बच्चो का मानसिक दिमाग भी बढ़ता है।

(8) **वर्ष मे एक बार तीर्थयात्रा व गुरु दर्शनो पर ले जाकर ⇒** कई बच्चे पूरे वर्ष कही घूमनें नही जाते है तो वह पाठशाला के माध्यम से तीर्थयात्रा व गुरुदर्शन कर लेते है और बच्चे पाठशाला मे बढ़-चढ़ कर भाग लेने लगते है।

(9) **महिला पुरुष पाठशाला खोलकर ⇒** यदि पाठशाला मे बच्चो को संस्कारित करना है तो माता-पिता को भी धर्म का स्वरूप सिखाना पड़ेगा ऐसे वर्तमान परिवेश मे महिला ~~व~~ पाठशाला व पुरुष पाठशाला का सहारा लेकर व पाठशालाएं

अच्छी तरीके से चलाई जा सकती है!

⑩ रंगारंग कार्यक्रम व कलश स्थापना ⇒ रंगारंग कार्यक्रम में कोई मुख्य अतिथि आदि बुलाकर वर्ष में एक बार करना चाहिए ताकि बच्चो की प्रतिभा उजागर होती है और जिसे देखकर कई बच्चे पाठशाला मे पढ़ने आनेलगते है। और कई शिक्षिकाएँ भी नई पाठशाला मे जुड़ जाती है!

वसुधैव कुटुम्ब की भावना को जाग्रत करती है - पाठशाला
सम्यग ज्ञान के साथ सम्यक् संस्कार प्रदान है - पाठशाला
अहिंसक, सत्यनिष्ठ, ईमानदार, पीढ़ी तैयार करनेवाली - पाठशाल

पाठशाला के माध्यम से हमे सफलता मिलेगी जरूर -

किसीने कहा है - लहरो से नौका पार नही होती।
कोशिश करने वालो की कभी हार नही होती!

मन है विश्वास → मन मे है विश्वास हम होगे कामयाब!